Major IX राष्ट्रीय चेतना किसी भी राष्ट्र या देश के विकास के लिए राष्ट्र के हर नागरिक में उसके हृदय में राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव, सामाजिक,आर्थिक,राजनीतिक,सांस्कृतिक हर क्षेत्र में राष्ट्र के विकास के लिए राष्ट्र के हर नागरिक में राष्ट्रीय चेतना का होना अति अनिवार्य है. देश की उन्नति के लिए राष्ट्र के हर नागरिक में देश के प्रति अच्छी सोच होना चाहिए.

वास्तव में कहा जाए तो राष्ट्रीय चेतना राष्ट्र की आत्मा है, प्रत्येक नागरिक के हृदय में अपने राष्ट्र के प्रति मान - सम्मान, राष्ट्र के प्रति राष्ट्रभक्ति, राष्ट्र प्रेम होना अति अनिवार्य है। राष्ट्रीय चेतना हमारे देश भारत में राष्ट्रीय चेतना भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता सेनानियों का बहुत बड़ा योगदान रहा है. स्वतंत्रता सेनानियों के सन 1947 के पहले जब देश में अंग्रेजों का हुकूमत था. हमारे देश के नागरिकों का बहुत ही दयनीय स्थिति थी. लोगों का जीवन जानवरों से भी बदतर था. हमारे देश में जो भी अनाज उपजता. अंग्रेजों के सिपाही जमींदार लोग खेतों खलिहानों से बोरियों भर भर के सारे अनाज ले जाते. हमारे देश के किसान मजदूर जो अनाज मोटे दाने भूसे चोकर जो भी बचता उससे ही खा करके जीवन व्यतीत करते,लोगों की बहुत ही दयनीय स्थिति थी. इस तरह लोगों में राष्ट्रीय चेतना का विकास के लिए, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गरम दल एवं नरम दल, लाल,बाल, पाल एवं महात्मा गांधी,सरोजिनी नायडू,पंडित जवाहरलाल नेहरू, मोतीलाल नेहरू, डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद इत्यादि. स्वतंत्रता सेनानियों में राष्ट्रीय चेतना की प्राण भरने के काम चंद्रशेखर आजाद,भगत सिंह, झांसी की रानी इत्यादि स्वतंत्रता सेनानियों ने राष्ट्रीय चेतना में प्राण भरने और उत्तेजना का काम स्वतंत्रता सेनानियों में राष्ट्रीय चेतना का प्राण भरने के साथ-साथ हमारे देश के राष्ट्र कवियों जैसे रामधारी सिंह दिनकर,सुभद्रा कुमारी चौहान,माखनलाल चतुर्वेदी हमारे राष्ट्रपिता गांधीजी, विश्व कवि रविंद्र नाथ टैगोर, बंकिम चटर्जी, ,भारतेंदु हरिश्चंद्र, मदन मोहन मालवीय, बाल गंगाधर तिलक, इत्यादि ने हमारे देश में अंग्रेजों को भगाने में देश की आजादी में राष्ट्रीय चेतना का बहुत बड़ा योगदान रहा हैं।

राष्ट्रीय चेतना की परिभाषा- राष्ट्रीय चेतना का तात्पर्य या उस भावना से है जो अपने राष्ट्र के प्रति समाज या व्यक्ति संस्कृति या देश के उन्नति के साथ-साथ देश के नागरिकों की भलाई उन्हें सुखी संपन्न बनाना, किसी भी जाति संप्रदाय का हो हर वर्ग को उन्नति के मार्ग को प्रशस्त करना,राष्ट्रीय चेतना में इसके साथ-साथ राष्ट्र के प्रति राष्ट्रभक्ति, राष्ट्र के प्रति समर्पण भाव देश के प्रति हर क्षेत्र में सशक्तिकरण के माध्यम,अस्मिता,गौरव एवं राष्ट्र को आत्मनिर्भर एवं उन्नत बनाना यह राष्ट्र के हर नागरिक को अपना कर्तव्य है कि देश के विकास के लिए मेहनत लगन से हर क्षेत्र में अपना -अपना काम ईमानदारी पूर्वक मेहनत और लगन से करना, यही है राष्ट्रीय चेतना का मूल मर्म।राष्ट्रीय चेतना का विकास से ही हमारे देश का विकास हुआ. आज हमारे स्वतंत्रता सेनानी नहीं होते तो या जो आधुनिक भारत है वह नहीं होता। स्वतंत्रता सेनानियों में हमारे स्वतंत्र भारत में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने ही स्वतंत्रता सेनानियों के मूल मर्म को समझा और देश की आजादी में राष्ट्रीय चेतना का विकास लाने में राष्ट्रपिता बापू का सबसे बड़ा योगदान रहा है। इन्होंने ही लाल,बाल,पाल, मोती लाल नेहरू, विपिन चंद्र पाल,विश्व कवि रवींद्र नाथ टैगोर, सरोजिनी नायडू भगत सिंह,चंद्रशेखर आजाद, स्वतंत्रता सेनानियों के मूल मर्म को एकत्रित कर बापू ने सन 1947 में राष्ट्रीय चेतना का विकास से देश को आजादी दिलाई यही राष्ट्रीय चेतना का मूल मर्म।

राष्ट्रीय चेतना के स्वरूपों का वर्णन -

(1) राजनीतिक चेतना

(2) सामाजिक चेतना

(3) सांस्कृतिक चेतना

(4) आर्थिक चेतना

(5) नारित्व चेतना

(1) राजनीतिक चेतना- जब किसी देश की जनता अपने राजनीतिक अधिकारों स्वतंत्रता और शासन प्रणाली के प्रति जागरूक होती है तब वहां राष्ट्र सशक्त होती है देश में राष्ट्रीय चेतना का सबसे सशक्त स्वरूप प्रथम स्वतंत्रता सेनानी मंगल पांडे, रानी लक्ष्मी बाई,तात्या टोपे,नाना साहब अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ संघर्ष किया एवं अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध आवाज ऊंचा किया यही राष्ट्रीय चेतना का मूल परिणाम था.

(2) सामाजिक चेतना- राजनीतिक चेतना के साथ -साथ किसी राष्ट्र देश में राजनीति के साथ-साथ समाज में भी अनेक तरह की बुराइयां फैलती है उसे दूर करने के लिए जो लोग समाज सुधारक का काम करते हैं एवं समाज की बुराइयों को दूर करने का प्रयास करते हैं। हमारे देश में जातिवाद छुआछूत बाल विवाह या शिक्षा महिलाओं की दयनीय स्थिति आर्थिक विषमता जैसी समस्याएं लंबे समय तक बनी रहती है जब समाज सुधारको जैसे राजा राममोहन राय,स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती इत्यादि समाज सुधारको ने देश में जाति-पाति,छुआछुत ,विधवा प्रतारन एवं शिक्षा में समाज सुधारक का काम किया।

(3) सांस्कृतिक चेतना - हमारे देश भारत में राजनीतिक एवं सामाजिक चेतना के साथ-साथ सांस्कृतिक चेतना भी अति अनिवार्य है,जब-जब हमारे देश में किसी दूसरे देश वाला हमारे संस्कृति को नुकसान करने का प्रयास किया या नुकसान किया तो हमारे देश के लोग अपनी संस्कृति को बचाने के लिए अपने आप को बलिदान भी कर दिए अपने संस्कृति को बचाने के लिए हमारा देश हर समय दुश्मनों को मार भगाया एवं अपने संस्कृति की संस्कार को अपनी वेदों साहित्य को पुनर्जीवित किया,अपनी संस्कृति को मिटने नहीं दिया,अपनी संस्कृति को बने बनाए रखा अपने राष्ट्र के लिए अपने पूर्वजों को जीवित रखने के लिए, हमारे संस्कृति का हमारे पुरखो के रीति रिवाज को पुनर्जीवित रखा, यहीं हमारी भारतीय संस्कृति है. रघुकुल रीत सदा चली आई, प्राण जाए पर वचन न जाए, यह हमारे भारतीय संस्कृति का पुरोधा है।

(4)आर्थिक चेतना - आर्थिक चेतना हमारे देश में अंग्रेजों के समय हम भारतीयों की आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय थी, हम लोगों का जीवन स्तर जानवरों से भी बदतर था, हमारे राष्ट्रपिता गांधी जी ने आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने के लिए अंग्रेजों के बिरूद्ध आंदोलन चलाया भारतीयों को आत्म- निर्भर बनाने के लिए, उन्होंने चरखा से सुत काटना, नमक छोड़ो आंदोलन, स्वदेशी आंदोलन इसी भावना से प्रेरित था।

(5) नारीत्व चेतना का विकास - नारियों में पुरुषों के जैसा शिक्षा, पूजा पाठ,संस्कृति ,आर्थिक, सामाजिक हर क्षेत्रों में नारियों को पुरुषों के जैसा जीने का अधिकार,हमारे देश के समाज सुधारकों ने बाल गंगाधर तिलक ,राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानंद, दयानंद सरस्वती के बातों को नए सिरे से झांसी की रानी,सरोजिनी नायडू,

सुभद्रा कुमारी चौहान इत्यादि नारियों ने हमारे देश की मां- बहनों को पुरुषों के जैसा जीने का अधिकार सिखलाया,यही है नारी चेतना का विकास।

निष्कर्ष :- राष्ट्रीय चेतना किसी भी राष्ट्र को मजबूत एवं सशक्त बनाने का आधार होती है राष्ट्रीय चेतना राष्ट्र की आत्मा मानी जाती है,राजनीतिक,आर्थिक, सांस्कृतिक,सामाजिक सभी का समावेश का मूल मंत्र हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने राष्ट्रीय चेतना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई,उनके दोनों दलों गरम दल एवं नरम दल ने भारत के विकास का आधार स्तंभ बना इन्हीं के चेतना के विकास से हमारे देश में विकास हुआ एवं देश को आजादी मिली एवं स्त्रियों में सशक्तिकरण की भावना जागृत हुई। इसके साथ-साथ हमारे देश के साहित्यकारों का भी बहुत बड़ा योगदान राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने कि मूल महता थी.